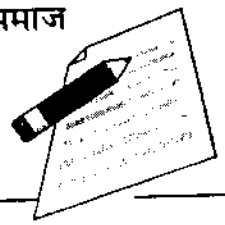

25

राष्ट्रीय एकीकरण : अवधारणा और चुनौती

जब आप किसी कक्षा में प्रवेश पाने के लिए आवेदन-पत्र भरते हैं या किसी नौकरी के लिए फार्म भरते हैं, वहाँ लिखना पड़ता है कि आपकी राष्ट्रीयता क्या है? इस स्थान पर हम 'भारतीय' शब्द लिखते हैं। अर्थात हम जानते हैं कि भारत हमारा देश है और हमारी राष्ट्रीयता 'भारतीयता' है। हमारा राष्ट्र केवल एक भौगोलिक इकाई ही नहीं, अपितु यह लोगों की एक ऐसी इकाई है, जिनके ये संवेग हैं कि हम एक ही देश के नागरिक हैं। जब हमारे ऊपर कोई बहुत बड़ी चुनौती आती है, तब हम सब एक होकर इन विनाशकारी शक्तियों के विरुद्ध लड़ते हैं। अपने तरीके से हम अपने देश की सहायता करते हैं और ऐसा करने में हम क्षेत्रीयता, भाषा, धर्म और सम्प्रदाय का विचार नहीं करते। इस भाँति हम राष्ट्रीय एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। राष्ट्रीय एकीकरण एक सकारात्मक विश्वास है, जो हमें प्रगति और सामाजिक विकास में मदद देता है। हमारा संविधान, राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्रीय गीत संपूर्ण देश को एकता के सूत्र में पिरोते हैं। वर्तमान में राष्ट्रीय एकीकरण के सामने वाम आतंकवाद एवं चरम पंथी चुनौतियाँ हैं। इनके अतिरिक्त क्षेत्रीयवाद, साम्प्रदायिकता, धार्मिक कट्टरवाद और भाषावाद की चुनौतियाँ राष्ट्रीय एकीकरण के सामने मुँह बायें खड़ी हैं। इस पाठ में हम अध्ययन करेंगे कि राष्ट्र से हमारा क्या आशय है और राष्ट्रीय एकीकरण से हम क्या समझते हैं। राष्ट्रीय एकीकरण की कौनसी चुनौतियाँ हमारे सामने हैं।

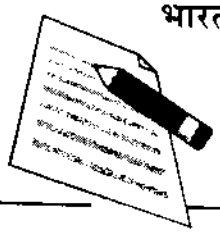

उद्देश्य

इस पाठ को पढने के बाद आप:

- राष्ट्र की परिभाषा तथा राष्ट्रीय एकीकरण की जानकारी प्राप्त करेंगे;
- साम्प्रदायिकता की अवधारणा को समझ सकेंगे;
- क्षेत्रवाद की अवधारणा को जान पायेंगे;
- भाषावाद की अवधारणा की व्याख्या कर सकेंगे; और
- राष्ट्रीय एकीकरण की चुनौतियों से परिचित हो सकेंगे।

25.1 राष्ट्रीय एकीकरण की अवधारणा

राष्ट्र और राष्ट्रीय एकीकरण की अवधारणा को समझने से पहले हमें इन दोनों पदों को परिभाषित करना चाहिए।

राष्ट्र एक देश है, जिसमें समाजिक एवं राजनीतिक चेतना जुड़ी होती है। जिसमें विभिन्न लोग मिलकर एक होने की भावना व्यक्त करते हैं। यह एक होने की भावना समान इतिहास, समाज, सम्मिलित मूल्य और संस्कृति के आधार पर होती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि एक होने की भावना लोगों को एक राष्ट्र के रूप में बांधती है।

भारत एक राष्ट्र है। यह एक जमीन है, जो विभिन्न समुदायों के निवास से बनी है। ये लोग विभिन्न धर्मों और भाषाओं को बोलते हैं। इन लोगों की जीवन पद्धति विभिन्न है लेकिन इन सब धार्मिक, भाषाई विभिन्नताओं के होते हुए भी हमें ऐसा लगता है कि हम भारतीय हैं। *हम सब* एक हैं कि भावना आर्थिक-राजनीतिक पारस्पारिकता के कारण है।

राष्ट्रीय एकीकरण एक सकारात्मक पहलू है। यह पहलू सामाजिक-आर्थिक तथा आर्थिक विभिन्नताओं या गैर बराबरी को कम करती हैं और राष्ट्रीय एकता एवं सुदृढ़ता को बढ़ाती है। इस तरह की सुदृढ़ता किसी प्राधिकार के द्वारा दबाव नहीं डालती। वास्तव में लोग विचारों, मूल्यों तथा संवेगात्मक तत्वों में भागीदारी करते हैं। यह एक ऐसी भावना है, जो विभिन्नता में एकता लाती है। हमारे लिए राष्ट्रीय पहचान सर्वोत्तम है। हमारे राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने वाले तत्वों में समान आर्थिक समस्याएँ कला, साहित्य, राष्ट्रीय उत्सव राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्र गीत आदि हैं।

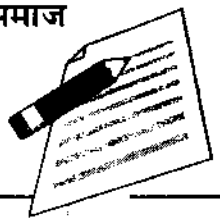

Notes

पाठगत प्रश्न 25.1

कोष्ठक में दिये गये उपयुक्त शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(1) राष्ट्र एक देश है, जिसमें .....सामाजिक और राजनीतिक संरचना होती है। (एकीकृत/अएकीकृत)

(2) एक राष्ट्र के लोगों में ..... विश्वास और अपनापन होता है। (सामान्य/असामान्य)

(3) राष्ट्रीय एकीकरण ..... चेतना पैदा करती है। (सामाजिक-राजनीतिक/ आर्थिक-राजनीतिक)

(4) राष्ट्रीय एकीकरण में ..... की भावना होती है। (विभिन्नता में एकता/एकता में विभिन्नता)

(5) राष्ट्रीय एकीकरण में राष्ट्रीय दृष्टिकोण के सामने साम्प्रदायिक दृष्टिकोण को ..... है। (स्वीकारता/छोड़ देता)

25.2 साम्प्रदायिकता

साम्प्रदायिकता का आशय अपने समुदाय को दूसरे समुदाय से श्रेष्ठ समझना है, यहाँ तक कि देश से ऊँचा समझना है। आप जानते हैं कि लोग मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और चर्च में पूजा तथा प्रार्थना के लिए जाते हैं। आप यह भी जानते हैं हिन्दू दुर्गा पूजा, दीपावली व रामनवमी मनाते हैं। आपने ईद, बकरीद तथा रमजान को मनाते हुए लोगों को देखा होगा। सिख गुरु पूर्णिमा को गुरुपर्व और इसाई बड़े दिन को मनाते हैं। आपने तीर्थों को देखा है, जो भगवान बुद्ध की आराधना के लिए होते हैं। इससे आप जान गये होंगे कि हमारे देश में विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। हमारे देश में इन त्यौहारों और अवसरों को सरकारी उत्सव घोषित किया गया है। इस बात में कोई हानि नहीं है कि कोई व्यक्ति अपने धर्म को मानता है, वह कोई कम निरपेक्ष व्यक्ति नहीं है परंतु कठिनाई इस बात में है कि लोग अपने समुदाय को भूलकर दूसरे समुदायों से श्रेष्ठ समझते हैं। साम्प्रदायिकता पद हमेशा नकारात्मक, विध्वंसात्मक और हानिकारक अर्थ में लिया गया है। जिसको कुछ लोग धार्मिक कट्टरवाद और रूढ़िवाद मानते हैं, राष्ट्रीय एकीकरण के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती है।

दुर्भाग्यवश, हमारे देश ने कुछ बुरे दृश्य देखें हैं। ये बुरे दृश्य कई अवसरों पर देखने को मिलते हैं। इन्हें हिन्दू और मुस्लिम समुदायों में ही नहीं देखा जा सकता। देश के

विभाजन के समय (1946-47) न केवल हिन्दू-मुसलमान समुदायों में दंगे हुए। ऐसे अवसर दूसरे समय भी देखने को मिले हैं। सन् 1984 में भूतपूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद भी हिन्दू-सिख के बीच में दंगे हुए। इसके बाद सन् 1992 में जब बाबरी मस्जिद का विध्वंश हुआ, तब भी हिन्दू-मुसलमानों के बीच दंगे हुए। हाल के दंगे जो सन् 2002 में गुजरात में हुए उन्होंने भारत की धर्मनिरपेक्ष छवि को बदरंग किया है।

जब साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, तब हम अपनी राष्ट्रीय पहचान को भूल जाते हैं और रूढ़िवादियों की तरह काम करने लग जाते हैं। दूसरे धर्मों के प्रति हममें ईर्ष्या और घृणा पैदा हो जाती है। ऐसे अवसर पर हम दूसरे धार्मिक समूहों की सम्पत्ति और जीवन को नष्ट कर देते हैं। दोनों ही साम्प्रदायिक समूह अपनी राष्ट्रीय पहचान भूल जाते हैं, याद रहती है तो केवल घृणा की भावना।

पाठगत प्रश्न 25.2

निम्न में से सही व गलत छांटिए।

1. साम्प्रदायिकता के अन्तर्गत एक समुदाय अपने आप को दूसरों से श्रेष्ठ समझता है। (सही/गलत)
2. मुस्लिम ईद और रमजान को मनाते हैं। (सही/गलत)
3. ईक्टर इसाईयों का त्यौहार है (सही/गलत)
4. जब साम्प्रदायिक दंगे होते हैं, तब हम राष्ट्रीय पहचान व राष्ट्रीय भावनाओं को भूल जाते हैं। (सही/ गलत)
5. साम्प्रदायिक दंगों में हम इर्ष्या और घृणा पैदा करते हैं। (सही/गलत)

भाषावाद

भाषावाद उन लोगों के लिए है, जो एक विशेष भाषा बोलते हैं, दूसरों के लिए प्रेम और पूर्वाग्रह है। आपने लोगों को हिन्दी, अंग्रेजी, बंग्ला, कन्नड़ तेलगु, मलयालम, मराठी, गुजराती आदि बोलते हुए सुना होगा। इस तरह विभिन्न भाषाओं को बोलना इस बात को बताता है कि हम एक बहुभाषायी राष्ट्र हैं। हमारे संविधान में 18 भाषाओं को आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त है। हिन्दी एवं अंग्रेजी हमारी राजकीय भाषा हैं। हर एक भाषा की अपनी एक लिपि एवं साहित्य है। भाषावाद लोगों को एक ही भाषा बोलने तक सीमित कर देता है। भाषा और संस्कृति अलग नहीं किये जा सकते।

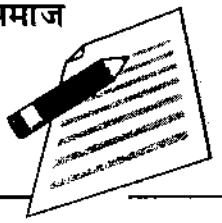

भाषा संस्कृति की वाहक है। यह संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक और एक समूह से दूसरे समूह तक ले जाती है। भाषा को पढ़ाना लोगों को दूसरी भाषा के साथ एकीकरण में लाना है। लेकिन एक भाषा को दूसरी भाषा से ऊँचा या नीचा बताने में संघर्ष होता है। इस तरह की स्थानीय अभिवृत्ति राष्ट्रीय एकीकरण को कमजोर कर देती है। हमारे देश में तमिलनाडु ने (1964) और असम (1967) ने भाषाई दंगे देखें हैं। साम्प्रदायवाद की तरह भाषावाद का प्रयोग भी नकारात्मक रूप से किया जाता है। भाषावादी प्रतिमान राष्ट्रीय एकीकरण के लिए एक चुनौती है।

18 भाषाओं को बोलने वाले लोगों की जनसंख्या का भाषाई स्थिति को नीचे बताते हैं:

क्रम संख्या	भाषा	1981 **की जनगणना के अनुसार बोलने वालों का प्रतिशत**
1.	हिन्दी	42.9
2.	बंगाली	8.3
3.	तेलगु	8.2
4.	मराठी	8.0
5.	तमिल	7.6
6.	उर्दू	5.7
7.	गुजराती	5.4
8.	मलयालम	4.2
9.	कन्नड़	4.2
10.	उड़िया	3.7
11.	पंजाबी	3.2
12..	असमी	2.2
13.	सिन्धी	1.6
14.	कश्मीरी	0.3

पाठगत प्रश्न 25.3

निम्न में से सही का चयन कीजिए:

(1) तमिलनाडु में भाषायी दंगे हुए:

(a) 1963 (b) 1964 (c) 1965 (d) कोई भी नहीं

(2) असम में भाषाई दंगे हुए:

(a) 1966 (b) 1967

(c) 1968 (d) कोई भी नहीं

(3) हमारे देश में हिन्दी बोलने वालों का प्रतिशत है:

(a) 41.0 (b) 42.0

(c) 42.9 (d) कोई भी नहीं

(4) हमारी राजकीय भाषा है:

(a) उर्दू (b) संस्कृत

(c) हिन्दी और अंग्रेजी (d) कोई भी नहीं

(5) साम्प्रदायिक दंगों से हम क्या पैदा करते हैं?

(a) प्रेम (b) राष्ट्रीय वफादारी

(c) घृणा और ईर्ष्या (d) कोई भी नहीं

25.3 क्षेत्रवाद

क्षेत्रवाद से हमारा अभिप्राय है – अपने क्षेत्र के प्रति गर्व एवं वफादारी की भावना को रखना क्षेत्रवाद है। कभी-कभी जब यह भावना आ जाती है कि हमारा क्षेत्र दूसरों से श्रेष्ठ है, तो यह क्षेत्रवाद है। क्षेत्रवाद एक अमुक भू-भाग है, जहाँ के निवासियों में भाषा, संस्कृति और आर्थिक हितों की एकता की भावना होती है। क्षेत्रवाद वस्तुत: स्थानीय वफादारी होती है। इस भाँति क्षेत्रवाद दूसरे क्षेत्र के लोगों के प्रति नकारात्मक भावना होती है। यह नकारात्मक भावना अपने क्षेत्र की स्वायत्ता के लिए होती है। इसी कारण प्रत्येक क्षेत्र अपनी स्वायत्ता की मांग करता है। यह इसी भावना के कारण है कि नये राज्य की मांग की जाती है। इसी के कारण अपनी भूमि के पुत्र का सिद्धान्त विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देता है।

भारत में विभिन्न राज्य व केन्द्रशासित क्षेत्र हैं। प्रत्येक राज्य एवं केन्द्रशासित क्षेत्र में भौगालिक सीमा होती है। प्रत्येक राज्य के अपने स्वयं के प्राकृतिक और मानव संसाधन होते हैं। यह होते हुए भी एक राज्य में ही पृथक राज्य बनाने की मांग की जाती है। यह मांग वैयक्तिक हितों को पूरा करने के लिए की जाती है। जोर यह दिया जाता है कि एक राज्य का विकास असंतुलित और दूसरे राज्य के संसाधनों के कारण होता है। झारखण्ड राज्य का पृथक्करण इसलिए किया गया कि बिहार राज्य झारखण्ड के स्रोतों का स्वयं उपभोग करता था। इन्हीं वैयक्तिक हितों ने झारखण्ड को बिहार से अलग कर दिया। महाराष्ट्र में आज भी विदर्भ को लेकर यह कहा जाता है कि

स्थानीय सम्पदा का उपभोग इस क्षेत्र को मिलना चाहिए। कुछ समय पहले महाराष्ट्र में रोजगार के अवसर प्राप्त करने के लिए अन्य राज्यों के लोगों को अवसर न देने के लिए इसी क्षेत्र में पैदा हुए लोगों को रोजगार देने की मांग की गयी थी।

नवम्बर 2000 में देश में तीन राज्यों यथा छत्तीसगढ़, उत्तरांचल और झारखण्ड का पृथक राज्य की तरह निर्माण हुआ। इन राज्यों का निर्माण क्षेत्रीय भावनाओं और वफादारी पर आधारित था। जब ये राज्य क्षेत्रीय भावनाओं पर बन गये तब कई नये राज्यों की मांग प्रारम्भ हुई। उत्तर प्रदेश में हरित प्रदेश और पूर्वांचल क्षेत्रों में स्वायत्त राज्यों की मांग उठने लगी है। महाराष्ट्र में नये विदर्भ राज्य की मांग हो रही है। आन्ध्र प्रदेश में लोग तेलंगाना राज्य की मांग करने लगे हैं। इसी तरह असम राज्य में बोडो राज्य की मांग हो रही है। बंगाल राज्य में गोरखालैण्ड की आवाज उठायी जा रही है। ऐसे राज्य जो स्वायत्ता चाहते हैं, उनमें स्थिति क्षेत्रीय दल स्वायत्ता के लिए आंदोलन कर रहे हैं, धरना दे रहे हैं, विरोध कर रहे हैं। कई बार अन्य क्षेत्रों के लोग संघर्ष कर रहे हैं। वे लोग अपनी राष्ट्रीय पहचान को भूल रहे हैं। वे अपने क्षेत्र के लिए मरने तक तैयार हैं। इस प्रकार की क्षेत्रीय वफादारी सच में देखा जाय तो राष्ट्रीय एकीकरण के लिए खतरनाक है।

पाठगत प्रश्न 25.4

निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए:

(1) क्षेत्रवाद क्या है?

---

(2) क्षेत्रवाद किस तरह से एक नकारात्मक पद है?

---

(3) क्षेत्रवाद किस पर अधिक जोर डालता है?

---

(4) तीन नये राज्यों का निर्माण कब हुआ?

---

(5) किस राज्य में नये तेलंगाना राज्य की मांग उठ रही है?

25.4 राष्ट्रीय एकीकरण को चुनौतियाँ

सम्प्रदायवाद, भाषावाद और क्षेत्रवाद ये तीनों हमारे देश में राष्ट्रीय एकीकरण की चुनौतियाँ हैं। ये सब पद निषोधात्मक हैं। इस पाठ में आपने राष्ट्र, राष्ट्रीय एकीकरण, साम्प्रदायवाद और क्षेत्रवाद के अर्थ को समझा है। अब हमें राष्ट्रीय एकीकरण में आने वाली चुनौतियों का विवेचन करना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि राष्ट्रीय एकीकरण जाति, धर्म आदि से परे है। हर हालत में जिसे हम राष्ट्रीय एकीकरण कहते हैं वह जाति, धर्म, आदि को कोई महत्व नहीं देता। दूसरे शब्दों में यह विभिन्नता में एकता की भावना है। यह बड़ी दुखदायी बात है कि एकपन की विशेषता को धार्मिक, भाषाई और क्षेत्रीय वफादारी कमजोर कर देती है। सच्चाई यह है कि भाषा, क्षेत्र आदि राष्ट्रीय एकीकरण में गंभीर चुनौतियाँ हैं।

हमारे देश में कई बार हिन्दू-मुस्लिम एकता को चुनौतियाँ दी गयी है। देखा गया है कि बिहार, उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों में छोटे बड़े दंगे हुए हैं। कई जगह 1947 और 1992 में सम्पूर्ण देश को इन दंगों ने घेर लिया था। दंगा करते समय लोग भूल जाते हैं कि वे सब भारतीय हैं और जिन लोगों को दंगे में मारते हैं, वे भी भारतीय हैं। ऐसे लोग राष्ट्रीय पहचान को याद नहीं रखते। कुछ राजनीतिज्ञ और धार्मिक नेता अपने स्वार्थ में देश की एकता को हाशिए में रख देते हैं। इस तरह साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकीकरण के लिए एक चुनौती है। साम्प्रदायिकता की तरह भाषावाद भी राष्ट्रीय एकीकारण को चुनौती देता है। भाषावाद में लोग अपनी राष्ट्रीय पहचान को खो देते हैं और अपनी भाषाई पहचान को अधिक महत्व देते हैं। भाषा अपेक्षित महत्व को लेकर वे एक दूसरे के दुश्मन हो जाते हैं। दूसरे भाषाई लोगों को वे ईर्ष्या और घृणा की दृष्टि से देखते हैं। दूसरे भाषाई समूहों को वे इस तरह देखते हैं जैसे कि वे भारतीय नहीं है। दक्षिण भारतीय राज्यों के लोग हिन्दी भाषा की अपेक्षा अंग्रेजी बोलने वालों को महत्वपूर्ण मानते हैं। इसी कारण हिन्दी और अंग्रेजी दोनों को सरकारी भाषाएँ समझा जाता है।

साम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और भाषावाद राष्ट्रीय एकीकरण की चुनौतियाँ हैं। क्षेत्र या राज्य बनाने की महत्वाकांक्षाएँ राष्ट्रीय एकीकारण की भावना को हानि पहुँचाती है। क्षेत्रवाद का कारण क्षेत्रीय राजनीतिक दल हैं– इस भावना ने क्षेत्रीय स्वायत्ता को बढ़ाया है। इसके कारण नये राज्य बने हैं और नये राज्यों के लिए दिन-प्रतिदिन स्थानीय स्वायत्ता बढ़ रही है।

पाठगत प्रश्न 25.5

निम्न कॉलम 'अ' का 'ब' के साथ मिलान कीजिए:

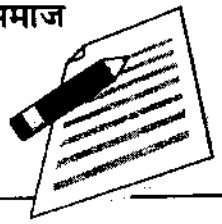

'अ'	'ब'
(1) राष्ट्रीय एकीकरण है	(1) साम्प्रदायवाद का ईंधन
(2) सम्प्रदायवाद, भाषावाद और क्षेत्रवाद है	(2) क्षेत्रीय स्वायत्ता की मांग
(3) राजनीतिक और धार्मिक नेता जोड़ते हैं	(3) उनकी भाषायी पहचान
(4) क्षेत्रवाद प्रायोजित है	(4) नकारात्मक पद
(5) भाषावाद में लोग अधिक से अधिक जुड़ते हैं	(5) एकता में विभिन्नता का भाव

आपने क्या सीखा

इस पाठ में अब तक आपने सीखा:

- राष्ट्र लोगों का एक मुख्य भाग है, जो एक दूसरे के साथ भावनाओं के साथ जुड़े होते हैं।
- राष्ट्रीय एकीकरण में एकपन की भावना पायी जाती है, जिसे किसी भी प्राधिकार द्वारा लागू नहीं किया जाता। विचार, भावनाएँ और क्रिया सभी इसी में से आती हैं।
- साम्प्रदायवाद अपने समुदाय को दूसरों से तथा राष्ट्र से भी ऊँचा समझता है।
- भाषावाद एक प्रकार का अतिरंजित प्रेम और पूर्वाग्रह है, उन लोगों के लिए जो अपनी ही भाषा बोलते हैं।
- क्षेत्रवाद एकता की एक बहुत बड़ी भावना है, जिसका आधार अपनी ही भाषा को बोलना है। यह आधार भाषा के अतिरिक्त संस्कृति और आर्थिक हितों पर भी आधारित है। इस तरह का क्षेत्रवाद क्षेत्रीय स्वायत्ता और नये राज्यों की मांग को बढ़ाता है।
- साम्प्रदायिकता, भाषावाद और क्षेत्रवाद राष्ट्रीय एकीकरण के लिए चुनौतियाँ हैं। ये चुनौतियाँ राष्ट्रीय पहचान एवं एकता को धक्का देती हैं।

पाठान्त प्रश्न

(1) राष्ट्र और राष्ट्रीय एकीकारण से आपका क्या अभिप्राय है?

(2) साम्प्रदायवाद क्या है? यह किस तरह राष्ट्रीय एकीकारण के लिए चुनौती है?

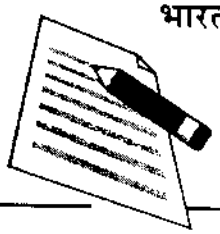

Notes

(3) भाषावाद क्या है? किस तरह से यह राष्ट्रीय एकीकरण के लिए हानिकारक है?

(4) क्षेत्रवाद क्या है? किस तरह से यह राष्ट्रीय एकीकारण को चुनौती देता है?

(5) हमारे राष्ट्रीय एकीकारण को कौन बढ़ावा देता है?

शब्दावली

स्वगुणार्थ	- अर्थ
पहचान	- मान्यता
भाषावाद	- एक ही भाषा बोलने वाले लोगों के लिए पसंदगी और सहयोग
राष्ट्र	- लोगों का ऐसा समूह जो सामान्य भावना और एक होने की प्रवृत्ति से बंधे होते हैं।
राष्ट्रीय एकीकरण	- सांस्कृतिक, भाषाई और क्षेत्रीय विभिन्नता के होते हुए भी एक समझना।
क्षेत्रवाद	- एक ही क्षेत्र के लोगों में आपसी प्रेम का पूर्वाग्रह होना।
धर्म निरपेक्षवाद	- धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना।
धर्म निरपेक्ष	- धर्म की भिन्नता से दूर रहना।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1 (1) एकीकृत (2) सामान्य

(3) राष्ट्रीय एकता जो विभिन्नता में है (4) छोड़ देना

25.2 (1) सही (2) सही (3) सही (4) सही (5) सही

25.3 (1) ब (2) ब (3) ब (4) स (5) स

25.4 (1) 9.19 को देखें (2) 9.1.1 को देखें (3) 9.1.9 को देखें
(4) 9.1.9 को देखें (5) 9.1.9 को देखें

25.5 A(i)-B(v)-B(iv), A(iii)-B(i), A(iv)-B (ii), A(v). B(iii)